संधि के नियम

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

सन्धि के नियम
1
अच् सन्धिः
सन्धिः
व्यञ्जनसन्धिः
विसर्गसन्धिः
गुणसन्धिः
यण् सन्धिः
अयादिसन्धिः
प्रकृतिभावसन्धिः
स्वर-सन्धिः
वृद्धिसन्धिः
दीर्घसन्धिः
पूर्वरूपसन्धिः
पररूपसन्धिः
जश्त्वसन्धिः
चर्त्व सन्धिः
हल्-सन्धिः
श्चुत्वसन्धिः
अनुस्वारसन्धिः
ष्टुत्वसन्धिः

यण् सन्धि के नियम

2

इक् वर्ण-

इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ, लृ

यण् वर्ण-

य् व् र् ल्

इकः	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	लृ
यण्	य्	व्	र्	ल्

नियम-

इक् वर्ण + असवर्ण अच् = इक् > यण्

अर्थात्

इ, ई + असवर्ण स्वरवर्ण (अच्) इ, ई = य्

उ ,ऊ + असवर्ण स्वरवर्ण (अच्) उ ,ऊ = व्

ऋ ॠ + असवर्ण स्वरवर्ण (अच्) ऋ ॠ = र्

लृ + असवर्ण स्वरवर्ण (अच्) लृ = ल्

जैसे- प्रति (इ) + (ए) एकम् = प्रत्येकम्

मधु (उ) + (अ) अरिः = मध्वरिः

मातृ (ऋ) + (आ) आकृतिः = मात्राकृतिः

लृ (लृ) + (आ) आकृतिः = लाकृतिः

यण् सन्धि के उदाहरणों का विश्लेषण 3

सूत्रम्- इको यणचि

अर्थ:- इक: स्थाने यण् स्यात् अचि परे संहितायाम्, अर्थात्

इक् वर्ण - **असवर्णअच्**

इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ + अ आ इ ई उ ऊ

य् व् र् ल् ऋ लृ ए ऐ ओ औ

इ + अ = इ > य्	प्रत् इ + अ ङ्गम्	प्र त् य् अङ्गम्	प्रत्यङ्गम्
ई + आ = ई > य्	नद् ई + आ गम:	न द् य् आगम:	नद्यागम:
उ + अ = उ > व्	मध् उ + अ रि:	म ध् व् अ रि:	मध्वरि:
ऊ + इ = ऊ > व्	मध् ऊ + इ दम्	म ध् व् इ दम्	मध्विदम्
ऋ + इ = ऋ > र्	मात् ऋ + इ च्छा	मा त् र् इच्छा	मात्रिच्छा
ऋ + आ = ऋ > र्	पित् ऋ + आ ज्ञा	पि त् र् आ ज्ञा	पित्राज्ञा
लृ + अ = लृ > ल्	लृ + अ र्थम्	ल् अ र्थम्	लर्थम्

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

5

अन्यान्युदाहरणानि

वधू+ आगमनम्	वध्वागमनम्	सु+अल्पः	स्वल्पः
विष्णु+ आज्ञा	विष्ण्वाज्ञा	अनु+अयः	अन्वयः
साधु+ आदेशः	साध्वादेशः	यदि+एवम्	यद्येवम्
शम्भु+आकारः	शम्भ्वाकारः	कर्तृ+आ	कर्त्रा
मातृ+अनुज्ञा	मात्रनुज्ञा	मातृ+आदेशः	मात्रादेशः
पितृ+आज्ञा	पित्राज्ञा	अनु + एषणम्	अन्वेषणम्
भ्रातृ+अंशः	भ्रात्रंशः	जननी+उदकम्	जनन्युदकम्

नोट-

यण् वर्ण य् व् र् ल् को कहते हैं। जब किसी वर्ण के स्थान पर ये यण् वर्ण आदेश के रूप में होता है तो उसे यण् सन्धि कहते हैं। इस सन्धि में इक् वर्ण (अर्थात्- इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ) शब्द (पद) के अन्त में रहता है तथा उसके बाद कोई असवर्ण अच् (अ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ) स्वर वर्ण होता है तो इक् वर्ण के स्थान पर क्रमशः यण् वर्ण का आदेश होता है।

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

7

दीर्घ सन्धि के उदाहरण

ई+ ई =ई	श्र् ई + ई श:	श्रीश:
उ + उ =ऊ	गुर् उ + उपदेश:	गुरूपदेश:
उ + ऊ =ऊ	लघ् उ + ऊर्मि:	लघूर्मि:
ऊ +उ =ऊ	वध् ऊ + उ त्सव:	वधूत्सव:
ऊ +ऊ =ऊ	वध् ऊ + ऊह:	वधूह:
ऋ + ऋ =ॠ	पित् ऋ + ऋणम्	पितॄणम्
ऋ + ऋ =ॠ	मात् ऋ +ऋणम्	मातॄणम्

मातॄणम् तथा पितॄणम् में ऋ की मात्रा दीर्घ है।

अ + अ =आ	अ+ आ =आ
धर्म+ अर्थ: - धर्मार्थ:	हिम+ आलय:- हिमालय:
वेद+ अन्त:- वेदान्त:	कार्य+ आलय:-कार्यालय:
वेद+ अंग:- वेदाङ्ग:	देव+ आलय:- देवालय:
पुर+ अरि:- पुरारि:	छात्र+ आवास:- छात्रावास:
आ+ आ =आ	**आ+ अ =आ**
दया+ आनन्द:-दयानन्द:	तथा+ अपि- तथापि
विद्या+आलय:-विद्यालय:	परीक्षा+ अर्थी- परीक्षार्थी
महा + आत्मा- महात्मा	विद्या + अर्थी - विद्यार्थी
प्रभा+ आकर:-प्रभाकर:	विद्या + अनुभव:-विद्यानुभव:

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

8

दीर्घ सन्धि के उदाहरण

इ+ इ =ई

कवि + इन्द्रः-कवीन्द्रः

रवि + इन्द्रः-रवीन्द्रः

मुनि + इन्द्रः- मुनीन्द्रः

अपि + इदम्- अपीदम्

इ+ ई =ई

कपि + ईशः-कपीशः

कवि + ईश्वरः-कवीश्वरः

गिरि + ईशः-गिरीशः

मुनि + ईश्वरः-मुनीश्वरः

ई+ इ =ई

सुधी + इन्द्रः-सुधीन्द्रः

देवी + इच्छा- देवीच्छा

ई+ ई =ई

श्री + ईशः-श्रीशः

मही + ईशः-महीशः

सती + ईशः-सतीशः

नदी + ईशः-नदीशः

उ+ उ =ऊ

मधु + उत्सवः-मधूत्सवः

विधु + उदयः-विधूदयः

गुरु + उपदेशः-गुरूपदेशः

साधु + उक्तम्-साधूक्तम्

विधु + उदयः-विधूदयः

मधु + उदयः-मधूदयः

ऊ+ उ =ऊ

वधू + उत्सवः-वधूत्सवः

भू + उत्सवः-भूत्सवः

उ+ ऊ =ऊ

लघु + ऊर्मिः-लघूर्मिः

भानु + ऊर्ध्वम्-भानूर्ध्वम्

ऊ+ ऊ =ऊ

भू + ऊर्ध्वम् - भूर्ध्वम्

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

9

गुण सन्धि के नियम

सूत्रम्- आद्गुणः

अर्थः- अवर्णात् असवर्ण अचि परे पूर्वपरयोः स्थाने गुण एकादेशः भवति

अक्
अ, आ

अर्थात्

\+

सवर्ण अच्
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ,
ऋ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ

गुण
ए, ओ, अर्, अल्

अ + इ = ए	घर्म् अ+इन्द्रः	धर्मेन्द्रः
अ + ई = ए	दिन् अ+ईशः	दिनेशः
आ + इ = ए	मह् आ+इन्द्रः	महेन्द्रः
आ + ई = ए	मह् आ+ईशः	महेशः
अ + उ = ओ	भाग्य् अ+उदयः	भाग्योदयः
अ + ऊ = ओ	जल् अ+ऊर्मिः	जलोर्मिः:
आ + उ = ओ	गङ्ग् आ+उदकम्	गङ्गोदकम्
आ + ऊ = ओ	मह् आ+ऊर्मिः	महोर्मिः

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

10

गुण् सन्धि के नियम

अ + ऋ = अर्	राज् अ+ऋषि:	राजर्षि:
आ + ऋ = अर्	मह् आ+ऋषि:	महर्षि:
अ + ऌ = अल्	तव् अ+ऌकार:	तवल्कार:
आ + ऌ = अल्	मह् आ+ऌकार:	महल्कार:

गुण् सन्धि के अन्य उदाहरण

उप + इन्द्र:	उपेन्द्र:	रमा + ईश:	रमेश:
सूर्य+ उदय:	सूर्योदय:	प्रासाद+ऊर्ध्व	प्रासादोर्ध्वम्
देव+ऋषि:	देवर्षि:	उप+ऋकार:	उपर्कार:
तव+ऌकार:	तवल्कार:	आ+ऌकार:	आल्कार:
देव+इन्द्र:	देवेन्द्र:	नर +ईश:	नरेश:
सुर+ईश:	सुरेश:	सुर+इन्द्र:	सुरेन्द्र:
राम+ईश्वर:	रामेश्वर:	परम+ईश्वर:	परमेश्वर:
पर+उपकार:	परोपकार:	हित+उपदेश:	हितोपदेश:
महा + उपदेश:	महोपदेश:	चरण + उदकम्	चरणोदकम्
महा + उदय:	महोदय:	गंगा + ऊर्मि:	गंगोर्मि:
वर्षा + ऋतु:	वर्षर्तु:	एषा + ऋद्धि:	एषर्द्धि:
भाग्य + उदय:	भाग्योदय:	राजा + ईश:	राजेश:

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

11

वृद्धिसन्धि के नियम

सूत्रम्- वृद्धिरेचि

अर्थ:- अवर्णात् एचि परे पूर्वपरयो: स्थाने वृद्ध्येकादेश: भवति

अर्थात्

अक्
अ, आ

\+

सवर्ण एच्
ए, ऐ, ओ, औ

वृद्धि-
आर्, ऐ, औ

अ + ए = ऐ	एक् अ+एकम्	एकैकम्
अ + ऐ = ऐ	मत् अ+ऐक्यम्	मतैक्यम्
आ + ए = ऐ	सद् आ+ एव	सदैव
आ + ऐ = ऐ	सद् आ+ऐक्यम्	सदैक्यम्
अ + ओ = औ	जल् अ+ओघ:	जलौघ:
अ + औ = औ	जल् अ+औष्ण्यम्	जलौष्ण्यम्
आ + ओ = औ	गङ्ग् आ+ओ घ:	गङ्गौघ:
आ + औ = औ	मह् आ+औषधि:	महौषधि:

12

अयादिसन्धि के नियम

सूत्रम्- एचोऽयवायाव:

अर्थ:- एच्-ए,ऐ,ओ,औ के वाद यदि स्वरवर्ण हो तो क्रमश: ए,ऐ,ओ,औ के स्थान में अय्, अव्, आय्, आव् होता है।

एच्	अर्थात्	अयादि
ए,ऐ,ओ,औ	→	अय्, अव्, आय्, आव्

ए + स्वर = ए >अय्	ऐ + स्वर = ऐ >आय्
ओ+ स्वर = ओ >अव्	औ + स्वर = औ >आव्

ने+अनम्= नयनम्	चे+अनम्= चयनम्	मुने+ए= मुनये
पो+अन:= पवन:	भो+अनम्= भवनम्	भो+अति=भवति
सै+अक:= सायक:	दै+अक:=दायक:	गै+अक:=गायक:
नौ+इक:=नाविक:	पौ+अक:=पावक:	भौ+उक:=भावुक:
गो +आम्= गवाम्	शे+अनम्=शयनम्	सखै+औ=सखायौ

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

15

श्चुत्वसन्धि के नियम

नियम- सकार तथा तवर्ग के वाद यदि शकार चवर्ग हो तो सकार तवर्ग के स्थान पर शकार चवर्ग हो जाता है।

स त थ द ध न + श च छ ज झ ञ

श च छ ज झ ञ

हरिस् + शेते = हरिश्शेते	कस् + चित् = कश्चित्
सत् + चित् = सच्चित	तत् + छत्रनम् = तच्छत्रम्
यज् + न: = यज्ञ:	सत् + चरित्रम् = सच्चरित्रम्
एतत् + छाया = एतच्छाया	तान् + जयति = ताञ्जयति
राज् + ञ: = राज्ञ:	तत् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा
सत् + जन: = सज्जन:	तत् + चित्रम् = तच्चित्रम्
शार्ङ्गिन् + जय: = शार्ङ्गिञ्जय:	

ष्टुत्वसन्धि के नियम

नियम- सकार तथा तवर्ग के वाद यदि षकार टवर्ग वर्ण हो तो सकार तवर्ग के स्थान पर षकार टवर्ग वर्ण हो जाता है।

स त थ द ध न + ष ट ठ ड ढ ण

ष ट ठ ड ढ ण

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

16

ष्टुत्वसन्धि के उदाहरण

नियम- सकार तथा तवर्ग के वाद या पूर्व यदि षकार टवर्ग वर्ण हो तो सकार तवर्ग के स्थान पर षकार टवर्ग वर्ण हो जाता है।

हरिस् + षष्ठः = हरिष्षष्टः	मनस् + टीकते = मनष्टीकते
तत् + टीका = तट्टीका	तत् + डमरुः = तड्डमरुः
धनुष+टङ्कारः=धनुष्टङ्कारः	मनस्+ठक्कुरः=मनष्ठक्कुरः
उत्+ डीनः = उड्डीनः	पृष् + तम् = पृष्ठम्
इष् + तः = इष्टः	कस् + टः = कष्टः

विविधसन्धि के उदाहरण

नियम- पदान्त म् + व्यञ्जन वर्ण = म् > अनस्वार

नगरम् + गच्छति =नगरं गच्छति	हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
धर्मम् + चर = धर्मं चर	आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते

नियम- पदान्त म् के वाद यदि वर्ग का प्रथम तथा तृतीय वर्ण हो तो म् के स्थान पर उस वर्ग के पञ्चम वर्ण हो जाता है।

वृक्षम् + कृन्तति-वृक्षङ्कृन्तति	अन्नम् + चर्वति—अन्नञ्चर्वति
समुद्रम् + तरति = समुद्रन्तरति	अन्नम् + पचामि = अन्नम्पचामि

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

17

विविधसन्धि के उदाहरण

नियम- एक ही पद में यदि ऋ, र्, ष्, वर्ण के वाद म् वर्ण हो तथा उसके वाद न हो तो न के स्थान पर ण होता है।

राम् + एन =रामेण	गुरु + ना = गुरुणा
पूष् + ना = पूष्णा	चतुर् + नाम् = चतुर्णाम्

नियम- वर्ग के तृतीय चतुर्थ वर्ण के वाद यदि वर्ग के द्वितीय वर्ण हो तो तृतीय चतुर्थ वर्ण के स्थान पर चर् वर्ण होता है।

ग घ ज झ ड ढ द ध ब भ + ख छ ठ थ फ

क च,ट,त प

छेद् + ता- छेत्ता	समिध् + पात्- समित्पात्
विपद् + सु = विपत्सु	दिक् + नाग: = दिग्नाग:

नियम- वर्ग के 1, 2, 3, 4 वर्ण के वाद यदि वर्ग के 5 वर्ण हो तो 1, 2, 3, 4 वर्ण के स्थान पर वर्ग का 5 वर्ण होता है।

वर्ग के 1,2,3,4 + 5 = 1,2,3,4 > 5

दिक् + नाग:- दिङ्नाग:	जगत् + नाथ:- जगन्नाथ:
दिक् + मुखम् = दिङ्मुखम्	षट् + मुखम् = दिङ्मुखम्

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

18

विविधसन्धि के उदाहरण

नियम- तवर्ग के वाद श् वर्ण हो तो तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है। जैसे-

त /थ /द /ध/ न + श् = त /थ /द /ध/ न > च/छ/ज/झ/ञ

तत् + श्रुतम् = तच्छ्रुतम्	उत् + शृङ्खल:=उच्छृङ्खल:
तत् + शोभते = तच्छोभते	तत् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा

नियम- तवर्ग के वाद यदि लकार हो तो तवर्ग के स्थान पर लकार होता है तथा न वर्ण के वाद यदि लकार हो तो लकार नकार के स्थान पर अनुनासिक लँकार होता है।

तत् + लीन:- तल्लीन:	उत् + लास:- उल्लास:
उत् + लेख: = लेख:	तत् + लेखनी = तल्लेखनी
विद्वान् + लिखति- विद्वाँल्लिखति	महान्+ लाभ:-महाँल्लाभ:

नियम- स्वर वर्ण के वाद यदि छ वर्ण हो तो मध्य में प्रथम वर्ण का आगम हो जाता है।

तरु + छाया - तरुच्छाया	परि + छेद:- परिच्छेद:
अनु + छेद: = अनुच्छेद:	वि + छेद: = विच्छेद:
सन्धि + छेद: = सन्धिच्छेद:	शिव + छाया = शिवच्छाया

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

19

विविधसन्धि के उदाहरण

नियम- यदि स्वरवर्ण के वाद ङ्, ण्, न् वर्ण हों और उसके वाद स्वरवर्ण हो तो ङ्, ण्, न् का द्वित्व होता है।

गच्छन्+अपि = गच्छन्नपि	खादन् +अपि =खादन्नपि
सुगण् +ईश:=सुगण्णीश:	प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा

नियम- पदान्त में वर्ग का 1, 2, 3, 4+ ह तो ह के स्थान पर पूर्व वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है।

वाक् + हरि:- वाग्घरि:	तत् + हि - तद्धि
उत् + हार: = उद्धार:	तत् + हितम् = तद्धितम्

नियम- र + र वर्ण हो तो एक र वर्ण का लोप हो जाता है। जैसे-

निर् + रसम् - निरसम्	नीर् + रज:- नीरज:
निर् + रोग: = निरोग:	पुनर् + रमते = पुनारमते

नियम- विसर्ग के वाद वर्ग का 3,4,5 वर्ण हो या य,र,ल,व,ह वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर उ वर्ण होता है। जैसे-

वय: + वृद्ध: - वयोवृद्ध:	अध: + मुखम्- अधोमुखम्
मन: + रथ: = मनोरथ:	मन: + योग: = मनोयोग:

नियम- विसर्ग+त/स हो तो विसर्ग के स्थान पर स होता है।

नम: + ते - नमस्ते	प्रथम: + सर्ग:- प्रथमस्सर्ग:

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

20 **नियम-** यदि विसर्ग के पूर्व तथा विसर्ग के वाद अकार हो तो वाद वाले अकार के स्थान पर ऽ होता है।

स:+अगच्छत् =सोऽगच्छत्	स:+अपि =सोऽपि
स: +अवदत् = सोऽवदत्	क:+ अयम् = कोऽयम्

नियम- विसर्ग + च,छ,श तो विसर्ग के स्थान पर श हो जाता है।

राम: + चलति-रामश्चलति	नि: + चलम् - निश्चलम्
शिर: + छेद: = शिरश्छेद:	कृष्ण: + छाग: =कृष्णश्छाग:
चन्द्र: + शोभते = चन्द्रश्शोभते	प्राय: + चित्तम् =प्रायश्चित्तम्

नियम- विसर्ग+क,ख,ट,ठ,प,फ हो तो विसर्ग के स्थान पर ष।

नि:+ काम: - निष्काम:	चतु: +खण्डम्-चतुष्खण्डम्
नि: + फलम् =निष्फलम्	नि: + पापम् = निष्पापम्

नियम- विसर्ग के पूर्व अ आ से भिन्न स्वर हो वाद में वर्ग के 3,4,5 वर्ण य,व,र,ह हो तो विसर्ग के स्थान र होता है।

भानु: + आगत: - भानुरागत:	मुनि: +आगत:- मुनिरागत:

नियम-अ के वाद विसर्ग+अकारभिन्नस्वर हो तो विसर्ग का लोप

देव: +इच्छति -देव इच्छति	अत: + एव- अत एव

नियम-आ के वाद विसर्ग+3,4,5 वर्ण य,व,र,ह हो तो विसर्ग लोप

देवा: + गता: -देवा गता:	नरा: + अत्र- नरा अत्र

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/

ई+ ई =ई	श्र् ई + ई श:	श्रीश:
उ + उ =ऊ	गुर् उ + उपदेश:	गुरूपदेश:
उ + ऊ =ऊ	लघ् उ + ऊर्मि:	लघूर्मि:
ऊ +उ =ऊ	वध् ऊ + उ त्सव:	वधूत्सव:
ऊ +ऊ =ऊ	वध् ऊ + ऊह:	वधूह:
ऋ + ऋ =ऋ	पित् ऋ + ऋणम्	पितॄणम्
ऋ + ऋ =ऋ	मात् ऋ +ऋणम्	मातॄणम्

मातॄणम् तथा पितॄणम् में ऋ की मात्रा दीर्घ है।

दीर्घ सन्धि के उदाहरण

अ + अ =आ	अ+ आ =आ
धर्म+ अर्थ: - धर्मार्थ: वेद+ अन्त:- वेदान्त: वेद+ अंग:- वेदाङ्ग: पुर+ अरि:- पुरारि:	हिम+ आलय:- हिमालय: कार्य+ आलय:-कार्यालय: देव+ आलय:- देवालय: छात्र+ आवास:- छात्रावास:
आ+ आ =आ	**आ+ अ =आ**
दया+ आनन्द:-दयानन्द: विद्या+आलय:-विद्यालय: महा + आत्मा- महात्मा प्रभा+ आकर:-प्रभाकर:	तथा+ अपि- तथापि परीक्षा+ अर्थी- परीक्षार्थी विद्या + अर्थी - विद्यार्थी विद्या + अनुभव:-विद्यानुभव:

Download All Type PDF : https://pdfseva.com/